ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-5* August- 2017
Anthology : The Research

हिंदी साहित्य और अलंकार प्रयोग
(हिंदी काव्य में अलंकार-प्रयोग के विशेष संदर्भ में)

सुमन वर्मा
व्याख्याता,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, धौलपुर
राजस्थान, भारत

Abstract

अलंकारों की उपादेयता न केवल व्यावहारिक जीवन में सौन्दर्य-वृद्धि तत्व के रूप में हैं, वल्कि साहित्य में भी, विशेष रूप से काव्य में भी सौन्दर्य-वृद्धि तत्व के रूप में सर्वमान्य है। अन्य शब्दों में, अलंकार-प्रयोग कविता के सौन्दर्य को उसी प्रकार बढ़ा देता है जिस प्रकार आभूषण नारी के लावण्य को बढ़ा देते हैं। शब्द तथा अर्थ की जिस विशेषता से काव्य का शृंगार होता है उसे ही अलंकार कहते हैं। हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में अनुप्रास, उपमा, रूपक, मानवीकरण, अनन्वय, यमक, श्लेष, उत्प्रेक्षा, संदेह, अतिशयोक्ति, वक्रोक्ति आदि अनेकों अलंकारों का प्रयोग होता रहा है। अलंकार प्रयोग की दृष्टि से हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में से काव्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है क्योंकि प्रत्येक कविता चाहे छोटी हो अथवा बड़ी और चाहे किसी भी रस में लिखी हुई हो, अलंकारयुक्त होती है। अलंकारों का प्रयोग विशेष रूप से हिंदी कविताओं में काव्य सौन्दर्य हेतु कवियों द्वारा किया जाता है।

व्यापक रूप में सौंदर्य मात्र को अलंकार कहते हैं और उसी से काव्य ग्रहण किया जाता है। भामह के अनुसार, वक्रार्थविजा एक शब्दोक्ति अथवा शब्दार्थवैचित्र्य का नाम अलंकार है। रुद्रट अभिधान प्रकार विशेष को अलंकार कहते हैं। दंडी के लिए अलंकार काव्य के शोभाकर धर्म हैं। सौंदर्य, चारुत्व, काव्यशोभाकर धर्म इन तीन रूपों में अलंकार शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है और शेष में शब्द तथा अर्थ के अनुप्रासोपमादि अलंकारों के संकुचित अर्थ में। निःसंदेह, अलंकार कविताओं में प्राणभूत तत्व और सुसज्जितकर्ता के रूप में मान्य हैं जो हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं को जिसमें हिंदी काव्य भी सम्मिलित है, सौन्दर्य प्रदान कर रोचक बनाते हैं।

प्रस्तुत शोध-अध्ययन हिंदी साहित्य, विशेषकर हिंदी काव्य में अलंकारों के महत्व और उपादेयता पर प्रकाश डालता है। अध्ययन निष्कर्ष हिंदी काव्य में विभिन्न अलंकारों के सार्थक प्रयोग की पुष्टि करता है।

मुख्य शब्दः हिंदी, साहित्य, अलंकार, विधा, अनुप्रास, उपमा, रूपक, अनन्वय, यमक, श्लेष, उत्प्रेक्षा, संदेह, अतिशयोक्ति, वक्रोक्ति।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य की विभिन्न विधायें हैं, यथा- गद्य, पद्य, नाटक, एकांकी, उपन्यास, समालोचना आदि। व्यापक अर्थ में हिंदी साहित्य की केवल दो विधा-गद्य और पद्य ही स्वीकार्य रही हैं, परंतु दोनों विधाओं को पुनः वर्गीकृत किया जाता रहा है। यद्यपि हिंदी साहित्य की प्रत्येक विधा में अलंकार प्रयुक्त होते रहे हैं। निबंध, नाटक, उपन्यास, एकांकी, समालोचना आदि सभी विधाऐं अलंकार के प्रयोग को मान्यता प्रदान करती रही हैं, परंतु अलंकारों का सर्वाधिक प्रयोग हिंदी काव्य में किया जाता रहा है।

जिस प्रकार रस हिंदी काव्य की आत्मा है, उसी प्रकार अलंकार हिंदी कविता का आधारभूत सौन्दर्य है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि कोई भी हिंदी कविता ऐसी नहीं है जिसमें एक या अधिक अलंकार प्रयुक्त न हों। कवि विशिष्ट कल्पनाशीलता के धनी

होते हैं, इसी लिए कहा भी जाता है कि 'जहाँ न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि'। शब्द-शक्ति और अलंकारों के माध्यम से उनके लिए किसी भी कल्पना को अभिव्यक्ति देना और उसका लेखन करना संभव है। काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व को अलंकार कहते हैं।

अलंकार कवि को कविता-विचार को विकसित करने और उसको सुंदर तरीके से प्रस्तुत करने में सहायता प्रदान करते हैं। काव्य का मुख्य उद्देश्य पाठकों को आनंदित करना होता है जिसकी पूर्ति हेतु कविगण विभिन्न अलंकारों का प्रयोग करते हैं। अलंकार को तो काव्य का आभूषण ही माना जाना चाहिए। यह मानवीय आभूषण की तरह ही काव्य का अवयव नहीं बल्कि काव्य का सौंदर्य बढ़ाने वाला घटक है। अलंकार के बिना भी काव्य स्वयं में पूर्ण है किंतु अलंकार इसके सौंदर्य को बढ़ा देता है।

अलंकार के भेद

विभिन्न अलंकारों को उनकी प्रकृति के अनुरूप निम्नलिखित तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

1. शब्दालंकार

जब एक शब्द विशेष शब्द की स्थिति में ही रहे और उस शब्द की जगह पर कोई और पर्यायवाची शब्द का इस्तेमाल कर देने से उस शब्द का अस्तित्व ही न बचे तो ऐसी स्थिति को शब्दालंकार कहते हैं।

शब्दालंकार के निम्नलिखित 6 भेद मान्य हैं-

1. **अनुप्रास अलंकार**-

जब किसी भी वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो तब जो चमत्कार होता है वह अनुप्रास अलंकार कहलाता है।अनुप्रास के 5 उपभेद हैं- छेकानुप्रास अलंकार, वृतानुप्रास अलंकार, लाटानुप्रास अलंकार, अत्यानुप्रास अलंकार, श्रुत्यानुप्रास अलंकार।उदाहरण-

चारु चंद्र की चंचल किरणें,
खेल रही हैं जल-थल में।

xxx

खिड़कियों के खड़कने से खड़कती हैं खिड़कियां
खिड़कियों के खड़कने से खड़ता है खड़कसिंह
खड़कसिंह के खड़कने से खड़कती हैं खिड़कियां

xxx

समझ समझ के समझ को समझो,
समझ समझना भी एक समझ है।
समझ समझ के जो ना समझे,
मेरी समझ में वो नासमझ है।

2. **यमक अलंकार**

जब एक ही शब्द का बार बार भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयोग हो, तो ऐसे शब्द-प्रयोग को यमक कहते हैं। उदाहरण-

कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय
भाग खाए बौराए नर , वा पाते बौराये।

इस मे पहले वाले कनक का अर्थ है, सोना और दूसरे का धतूरा।

ऊँचे ऊँचे मन्दर के अन्दर रहनवारी ऊँचे घोर मन्दर के अंदर रहाती हैं

इस मे पहले वाले मन्दर का अर्थ है महल दूसरे का गुफाएँ।

3. **पुनरुक्ति अलंकार**

पुनरुक्ति अलंकार 'पुनः+उक्ति' इन दो शब्दों से मिलकर बनता है। जब कोई शब्द दो या दो से अधिक बार दोहराया जाता है, परंतु उनका अर्थ समान होता है, तो वहाँ पर 'पुनरुक्ति अलंकार' होता है। जब किसी पंक्ति में कोई शब्द दो बार दोहराया जाता है, तो उस जगह पर पुनरुक्ति अलंकार होता है। उदाहरण-

पल-पल परिवर्तित प्रकृति वेश।

यहां 'पल' शब्द की दो बार आवृत्ति है परंतु प्रत्येक दोनों का एक ही अर्थ निकाल रहा है।

जागो वंशीवारे ललना जागो मोरे प्यारे
रजनी बीती भोर भयो है, घर घर खुले किवारे ,
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल ,जय जय शब्द उचारे।
मधुर वचन कहि-कहि परितोषीं।
विहग-विहग
फिर चहक उठे ये पुंज-पुंज
कल-कूजित कर उर का निकुंज
चिर सुभग-सुभग।

4. **विप्सा अलंकार**

जब किसी पंक्ति में आदर, हर्ष, शोक विस्मयादिबोधक आदि भावों को प्रभावशाली रूप से व्यक्त करने हेतु शब्दों की पुनरावृत्ति हो, तो वहां विप्सा अलंकार होता है। उदाहरण-

अरे! अरे!! धिक्कार तुम्हें है,
कैसे हो तुम वीर कहाते?

यहां पर – 'अरे! अरे!!' की पुनरावृत्ति हुई है, जिससे धिक्कार का भाव और भी गहरा हो गया है।

मोही मोही मोहन को मन भयो राधामय
राधा मन मोही मोही मोहन मयी मयी।

5. **वक्रोक्ति अलंकार**

वक्ता द्वारा प्रयुक्त शब्दों का श्रोता द्वारा भिन्न अर्थ प्रदान किये जाने की स्थिति में वक्रोक्ति अलंकार होता है। काकू वक्रोक्ति एवं श्लेष वक्रोक्ति इसके दो भेद हैं।

को तुम हौ इत आये कहां घनस्याम हौ तौ कितहुं बरसो।
चितचोर कहावत हैं हम, तो तहां जाहु जहां धन है सरसौं।।

कहा जा रहा है कि तुम कौन हो? उत्तर मिलता है कि हम घनश्याम हैं। यानी कृष्ण हैं। पर तो घनश्याम का अन्य अर्थ- बादल, मानकर कहा जा रहा है कि कहीं और जाकर बरसो। जब कहा गया कि हम चितचोर हैं तो कहा जा रहा है कि वहां जाओ जहां पर अपार धन हो।

6. **श्लेष अलंकार**

जब एक शब्द दो अथवा अधिक वार प्रयुक्त हो और हर बार उसका अलग अर्थ हो, तो वहां श्लेष अलंकार होता है। उदाहरण-

चिर जीवहु जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर।

सदा जीवित रहो। तुम्हारी जोड़ी बनी रहे। तुम दोनों में गहरा प्रेम क्यों न हो? आखिर तुम दोनों में से कौन कम है? ये वृषभानु की पुत्री राधा हैं। तो वो हलधर के भाई कृष्ण हैं। पर वृषभानुजा का दूसरा अर्थ भी हे वृषभ की अनुजा यानी बैल की बहन। इसी तरह हलधर के बीर का भी एक अन्य अर्थ है- बैल के भाई।

रहीमन पानी रखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे मोती मानस चून।

इसमें पानी का अर्थमोती के लिये चमक,मानुस (मनुष्य) केलिए आत्माभिमान या गौरव, तथा चूने के लिए पानी या जल

सारंग ने सारंग ग्रहों तो सारंग पहुंचो आए
जो सारंग सारंग कहे तो सारंग छूटो जाए ।

इसमे सारंग शब्द के तीन अर्थ है सारंग -मोर ,सारंग- सांप सारंग-बादल तो इस तरह से इसमें सारंग शब्द के तीन अर्थ है मोर ने सांप को पकड़ लिया है और उसी समय बादल आ जाता है तो अगर मोर बादल को देखकर खुशी से नाचना और चिल्लाना शुरू करता है तो सांप उसके मुंह से छोटा जा रहा है।

2. अर्थालंकार

जिस जगह पर अर्थ के माध्यम से काव्य में चमत्कार होता हो उस जगह अर्थालंकार होता है। **उपमा** (जब किसी व्यक्ति या वस्तु की तुलना अथवा समानता, किसी समान गुण के आधार पर दूसरे यक्ति या वस्तु से की जाए, तो वहाँ पर उपमा अलंकार होता है।), **रूपक** (जहाँ पर उपमेय को ही उपमान बना दिया जाये, वहाँ पर रूपक अलंकार होता है।), **उत्प्रेक्षा** (जहां पर उपमेय में उपमान की संभावना की जाये, वहां पर उत्पेक्षा अलंकार होता है।), **दृष्टांत** (जहाँ पर एक बात कहकर, फिर उससे मिलती-जुलती दूसरी बात कहकर पहली बात का उदाहरण दिया जाये, वहां पर दृश्टांत अलंकार होता है।), **संदेह** (जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि उपमान वास्तव में उपमेय है या नहीं, तब वहां पर संदेह अलंकार होता है।), **अतिशयोक्ति** (जब किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन इस तरह से बढ़ा-चढ़ाकर किया जाये कि लोक समाज की सीमा या मर्यादा ही टूट जाये, तो वहां पर अतिश्योक्ति अलंकार होता है।), **उपमेयोपमा** (इस अलंकार में उपमेय और उपमान को परस्पर उपमान और उपमेय बनाने की कोशिश की जाती है।), **प्रतीप** (जहां पर उपमेय को उपमान के समान न कहकर, उलटे उपमान को ही उपमेय कहा जाये, वहाँ पर प्रतीप अलंकार होता है।), **अनन्वय** (जब उपमेय की समता में कोई उपमान नहीं मिलता, और कह दिया जाता है कि उसके समान स्वयं वही है, यानी उपमेय का उपमान, उपमेय ही है, तब अनन्वय अलंकार होता है।), **भ्रांतिमान** (जब उपमेय में उपमान के होने का भ्रम हो जाये, वहाँ पर भ्रांतिमान अलंकार होता है, या जहाँ एक वस्तु को देखने पर, दूसरी वस्तु का भ्रम हो, वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है।), **दीपक** (जहाँ पर प्रस्तुत और अप्रस्तुत का एक ही धर्म स्थापित किया जाता है, वहाँ पर दीपक अलंकार होता है।), **अपह्नि** (जब किसी सत्य बात या वस्तु को छिपाकर, उसके स्थान पर किसी झूठी वस्तु की स्थापना की जाये, तो वहाँ पर अपह्नति अलंकार होता है।), **व्यतिरेक** (जहाँ उपमान की अपेक्षा, अधिक गुण होने के कारण उपमेय का उत्कर्ष हो, वहाँ पर व्यतिरेक अलंकार होता है।), **विभावना** (जहाँ पर कारण के न होते हुए भी कार्य का होना दर्षाया जाए, वहाँ पर विभावना अलंकार होता है।), **विशेषोक्ति** (जहाँ कार्य सिद्धि के समस्त कारणों के विद्यमान रहते हुए भी कार्य न हो, वहाँ पर विशेषोक्ति अलंकार होता है।), **अथात्नरन्यास** (जब किसी सामान्य कथन से, विशेष कथन का अथवा विशेष कथन से, सामान्य कथन का समर्थन किया जाये, वहाँ पर अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है।), **उल्लेख** (जहाँ पर किसी एक वस्तु को अनेक रूपों में ग्रहण किया जाए, तो उसके अलग-अलग भागों में बटने को उल्लेख अलंकार कहते हैं।), **विरोधाभास** (जब किसी वस्तु का वर्णन करने पर विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो, तो वहाँ पर विरोधाभास अलंकार

होता है।), **असंगति** (जहाँ पर कार्य और कारण का विरोध प्रतीत हो, वहाँ पर असंगति अलंकार होता है।), **मानवीकरण** (जहाँ पर जड़ में चेतन का आरोप किया जाये, वहाँ पर मानवीकरण अलंकार होता है।), **अन्योक्ति** (जहां पर अप्रस्तुत के माध्यम से प्रस्तुत का वर्णन किया जाये, वहां पर अन्योक्ति अलंकार होता है।), **काव्यलिंग** (जहाँ पर किसी युक्ति से किसी बात का समर्थन किया जा रहा हो, वहां पर काव्यलिंग अलंकार होता है।), **स्वभोक्ति** (किसी वस्तु के स्वाभाविक वर्णन को, स्वभावोक्ति अलंकार कहते हैं।), **कारणमाला** (जहां अगले-अगले अर्थ के पहले-पहले अर्थ हेतु हों, वहां कारणमालालंकार होता है।), **पर्याय** (एक क्रम से अनेक में पर्यायालंकार होता है।), **समासोक्ति** (श्लेषयुक्त विशेषणों के द्वारा दो अर्थों का संक्षेप होने से समासोक्ति अलंकार होता है।) आदि अर्थालंकार के भेद हैं।

३. उभयालंकार

शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों के योग युक्त अलंकार उभयालंकार कहलाता है। उदाहरण- कजरारी अखियन में कजरारी न लखाय।

उद्देश्य

1. हिंदी साहित्य की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालना
2. हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करना
3. हिंदी काव्य में अलंकार-प्रयोग को एक मूलभूत विशेषता के रूप में प्रस्तुत करना
4. अलंकारों के अर्थ और उनके विभिन्न भेदों और उपभेदों को व्यक्त करना।

प्राक्कल्पना

1. हिंदी साहित्य विश्व का महत्वपूर्ण साहित्य है।
2. व्यापक अर्थ में, गद्य एवं पद्य हिंदी साहित्य की प्रमुख विधाएँ हैं।
3. हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में अलंकारों का प्रयोग सौन्दर्य प्रदान करने हेतु होता है।
4. हिंदी काव्य अलंकारयुक्त है।
5. अलंकार-प्रयोग हिंदी कविताओं को सौंदर्ययुक्त कर आकर्षक और रोचक बनाता है।

साहित्य पुनरावलोकन

1. 'काव्य में अलंकार का महत्व अनन्य साधारण होता है। काव्य के मुख्य दो पक्ष होते हैं- अनुभूति पक्ष एवं अभिव्यक्ति पक्ष। अन्य शब्दों में, इनको आतंरिक पक्ष अथवा भाव पक्ष एवं बाह्य पक्ष अथवा कला पक्ष कहते हैं। कला पक्ष का मुख्य आधार अलंकार, छंद, भाषा-शैली, बिंब आदि होते हैं। इन सबमें अलंकार सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है'।[1]
2. 'प्रथमतया रुद्रट ने ही अलंकारों का वैज्ञानिक दृष्टि से वर्गीकरण किया। भरत के पश्चात् रुद्रट ने ही रस को काव्य के पृथक रूप में निर्दिष्ट किया। रुद्रट ने जहाँ एक ओर पूर्व-प्रचलित अलंकारवादी परंपरा का सम्यक निर्वाह किया है, वहीं दूसरी ओर उत्तरवर्ती ध्वनिवादियों के सिद्धांतों की आधारशिला भी स्थापित की है'।[2]
3. 'काव्य का सौंदर्य व शोभा बढ़ाने वाले तत्त्व अलंकार कहलाते हैं। आभूषण जो शरीर का सौंदर्य बढ़ाने के लिए धारण किए जाते हैं। " काव्यशोभा करान धर्मानअलंकारान प्रचक्षते ।" अर्थात् वह कारक जो काव्य की शोभा बढ़ाते हैं अलंकार कहलाते हैं। जिस प्रकार शरीर के बाहरी भाग को सजाने-संवारने के लिए ब्यूटी पार्लर, व्यायाम शालाएं, हेयर कटिंग सैलून, प्रसाधन सामग्री, आभूषणों की दुकानें हैं तथा आंतरिक भाग को सजाने के लिए शिक्षण-संस्थाएं, धार्मिक संस्थाएं, महापुरुषों के प्रवचन आदि हैं। उसी प्रकार साहित्य के बाहरी रूप को सजाने के लिए शब्दालंकार और आंतरिक रूप को सजाने के लिए अर्थालंकार का प्रयोग किया जाता है'।[3]
4. 'हिंदी काव्य साहित्य के सभी युगों में विभिन्न रसों से युक्त कविताओं में अलंकारों का प्रयोग किया गया। भारतेन्दु युग से राष्ट्रीय काव्यधारा का जागरणकाल आरम्भ होकर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी युग में पुनर्जागरणकाल भारतीय राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना का काल कहा जाना प्रासंगिक है। राष्ट्रीय अभियान में मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, माखन लाल चतुर्वेदी, बाल कृष्ण शर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान प्रभूति हिंदी साहित्य के राष्ट्रीय काव्यधारा के सर्जक अपने काव्य सृजन के द्वारा राष्ट्रवाद की धरना को प्रतिफलित होने का अवसर प्रदान कर रहे थे'।[4]
5. 'जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, पंडित माखन लाल चतुर्वेदी छायावादी काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। छायावाद नामकरण का श्रेय मुकुटधर पाण्डेय को जाता है'।[5]

शोधपद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन गुणात्मक शोध की श्रेणी में आता है जिस हेतु गुणात्मक शोध प्ररचना का निर्माण किया गया। इसके अंतर्गत लेखिका द्वारा विभिन्न प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों

से हिंदी साहित्य, हिंदी काव्य और अलंकारों एवं हिंदी काव्य में उनके सटीक प्रयोग सम्बन्धी तथ्यों को संकलित कर उनका विवेचन किया।तथ्य संकलन के परंपरागत स्रोतों के अतिरिक्त इंटरनेट साइट्स पर उपलब्ध साहित्य जिसमें सार्वजनिक रूप से प्रकाशित शोध-प्रबंध, नेशनल एवं इंटरनेशनल जर्नल्स में प्रकाशित लेख और शोधपत्र आदि हैं, का भी सीमित अर्थ में अध्ययन किया। शोध-निष्कर्ष का आधार लेखिका का हिंदी साहित्य, हिंदी काव्य और हिंदी काव्य में अलंकारों का प्रयोग सम्बन्धी पूर्व अध्ययन और पूर्व ज्ञान विशेषरूप से उल्लेखनीय है।

निष्कर्ष

अलंकार को एक ऐसे उपकरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है और समझा जा सकता है जो किसी काव्य रचना को सौन्दर्य प्रदान कर उसको आकर्षक और रोचक बनाता है और जो पाठकों को आनंदानुभूति प्रदान करता है। यह काव्यशास्त्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और कवि को साहित्यिक रचनाओं में ब्रह्मांडिकता और सौंदर्य को स्थापित करने में मदद करता है। इसके माध्यम से कवि अपनी भावनाओं, विचारों और रचनात्मकता को प्रकट करता है। भारतीय काव्य शास्त्र परंपरा में रस के बाद दूसरा महत्वपूर्ण संप्रदाय अलंकार संप्रदाय है अलंकार का सामान्य अर्थ है आभूषण, जो काव्य की शोभा बढ़ाए तो जिस प्रकार रस को काव्य की आत्मा माना गया है उसी प्रकार अलंकार को काव्य आभूषण, शोभा माना जाता है।

यह कवि को अपनी भावनाओं, विचारों और कथाओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने में मदद करता है। इसके उपयोग से रचनाओं में सौंदर्य और प्रभाव उत्पन्न होता है। अलंकार का उपयोग लेखक और पाठक दोनों के लिए मानवीय परिणाम पैदा करता है। यह काव्यिक रचनाओं में भावनाओं को प्रकट करता है, शब्दों को रंगीन बनाता है, पाठकों को मनोहारी अनुभव प्रदान करता है, और उन्हें उत्साहित करता है। अलंकार साहित्यिक दुनिया को आकर्षित करता है और उसे सुंदरता और प्रभावशीलता की दुनिया में ले जाता है।

विचारकों ने अलंकारों को शब्दालंकार, अर्थालंकार, रसालंकार, भावालंकार, मिश्रालंकार, उभयालंकार तथा संसृष्टि और संकर नामक भेदों में बाँटा है। इनमें प्रमुख शब्द तथा अर्थ के आश्रित अलंकार हैं। अलंकार के मुख्यतः भेद माने जाते हैं-- शब्दालंकार, अर्थालंकार तथा उभयालंकार। शब्द के परिवृत्तिसह स्थलों में अर्थालंकार और शब्दों की परिवृत्ति न सहनेवाले स्थलों में शब्दालंकार की विशिष्टता रहने पर उभयालंकार होता है।शब्दालंकारों में अनुप्रास, यमक, श्लेष तथा वक्रोक्ति की प्रमुखता है। अर्थालंकारों की संख्या लगभग एक सौ पचीस तक पहुँच गई है। अर्थालंकारों की मूलभूत विशेषताओं को ध्यान में रखकर आचार्यों ने इन्हें मुख्यतः पांच वर्गों में विभाजित किया है-

1. सादृश्यमूलक - उपमा, रूपक आदि;
2. विरोधमूलक- विषय, विरोधभास आदि;
3. शृंखलाबंध- सार, एकावली आदि;
4. तर्क, वाक्य, लोकन्यायमूलक काव्यलिंग, यथासंख्य आदि;
5. गूढ़ार्थप्रतीतिमूलक - सूक्ष्म, पिहित, गूढ़ोक्ति आदि।

निष्कर्ष के रुप में अंतिम रूप से कहा जा सकता है कि जहाँ रस हिंदी काव्य की आत्मा है जिसके बिना उसका कोई अस्तित्व ही नहीं होता, तो वहीं अलंकार हिंदी काव्य को सौन्दर्य प्रदान करने वाले वे उपकरण हैं जो रसानुसार काव्य को न केवल सौन्दर्य प्रदान करते हैं, अपितु अलंकार कवि को अपनी कविताओं को इस प्रकार आकर्षक और रोचक बनाकर पाठकों के ह्रदय तक पहुंचाने में सहायक होते हैं कि पाठक अपने अंतर्मन में विशेष आनंद की अनुभूति का अनुभव करता है।

संदर्भ सूची

1. *बागवान नौशाद महमद, 'काव्य में अलंकार', गोल्डन रिसर्च थॉट्स, वॉल्यूम 5, इशू 10, अप्रैल 2016*
2. *मनोरमा, 'रुद्रट पर हुए शोधकार्यों का सर्वेक्षण', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च, वॉल्यूम 2, इशू 10, वर्ष 2016*
3. *डबास, डॉ. जयदेव, 'हिंदी भाषा शिक्षण', दोआबा हाउस,1688 नई सड़क, दिल्ली, 2016, पपृ॰ 210, 211*
4. *अंशुला मिश्रा, 'राष्ट्रीय काव्यधारा: एक अध्ययन', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, वॉल्यूम 4, इशू 5, मई 2017, पृष्ठ 394-397*
5. *हिन्दी साहित्य कोश, भाग 1, प्रधान सम्पादक - धीरेन्द्र वर्मा, प्रकाशक- ज्ञानमण्डल लिमिटिड वाराणसी, तृतीय संस्करण 1985, पृष्ठ 259*